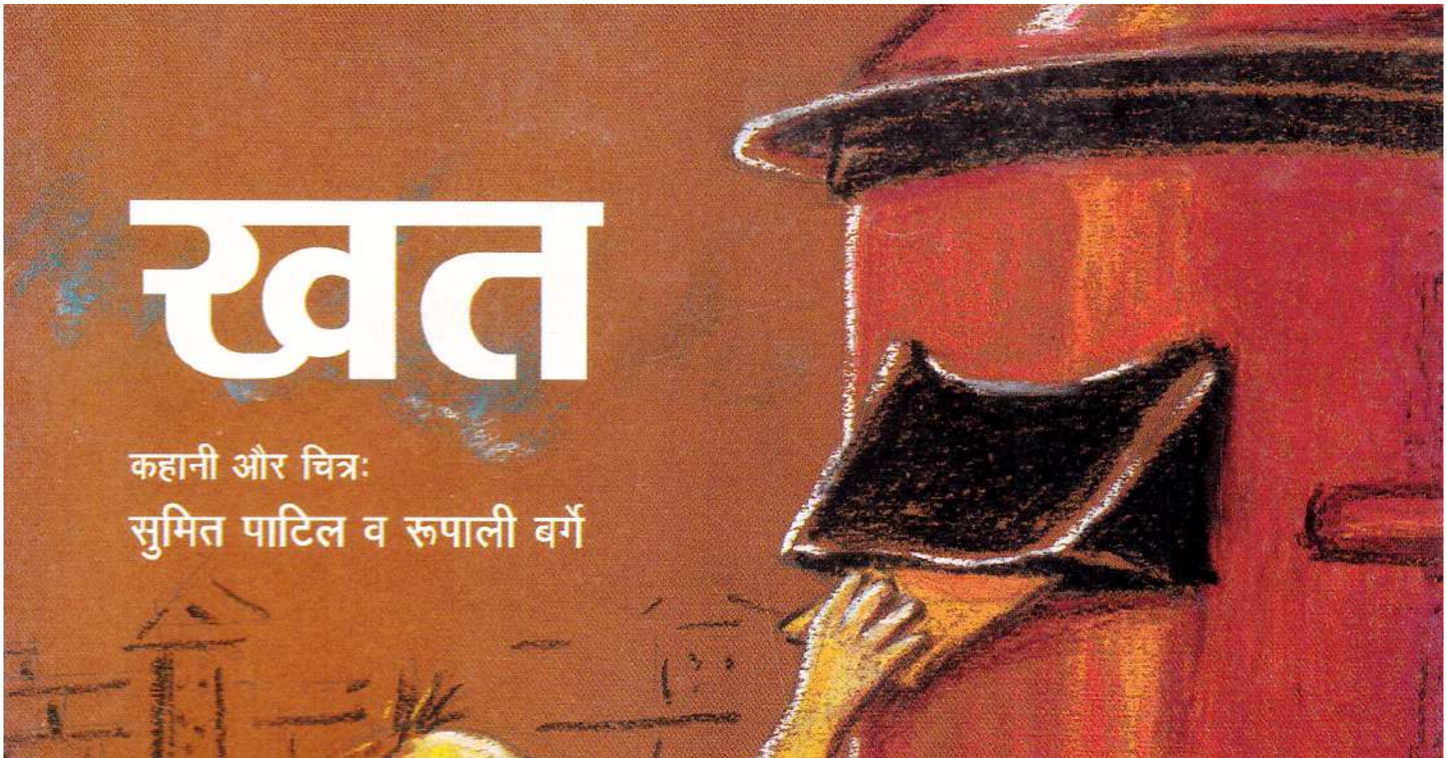
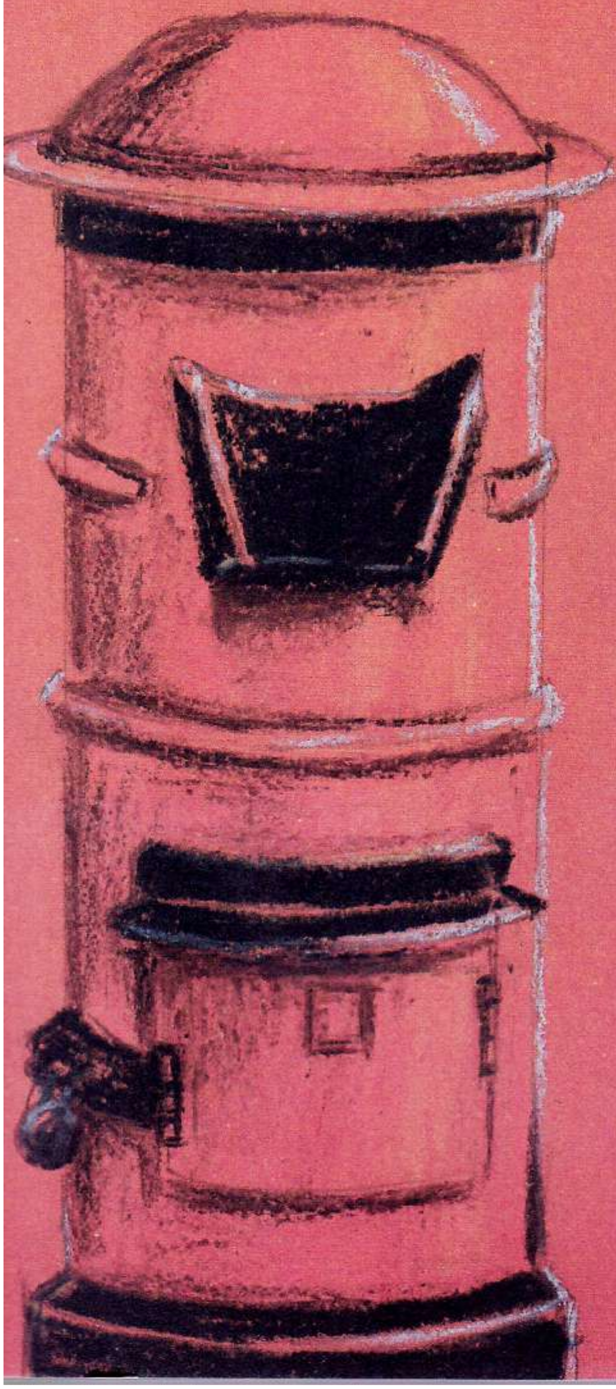
खत

कहानी और चित्रः
सुमित पाटिल व रूपाली बर्गे



एकलव्य



खत

ये किताब.......................................

....

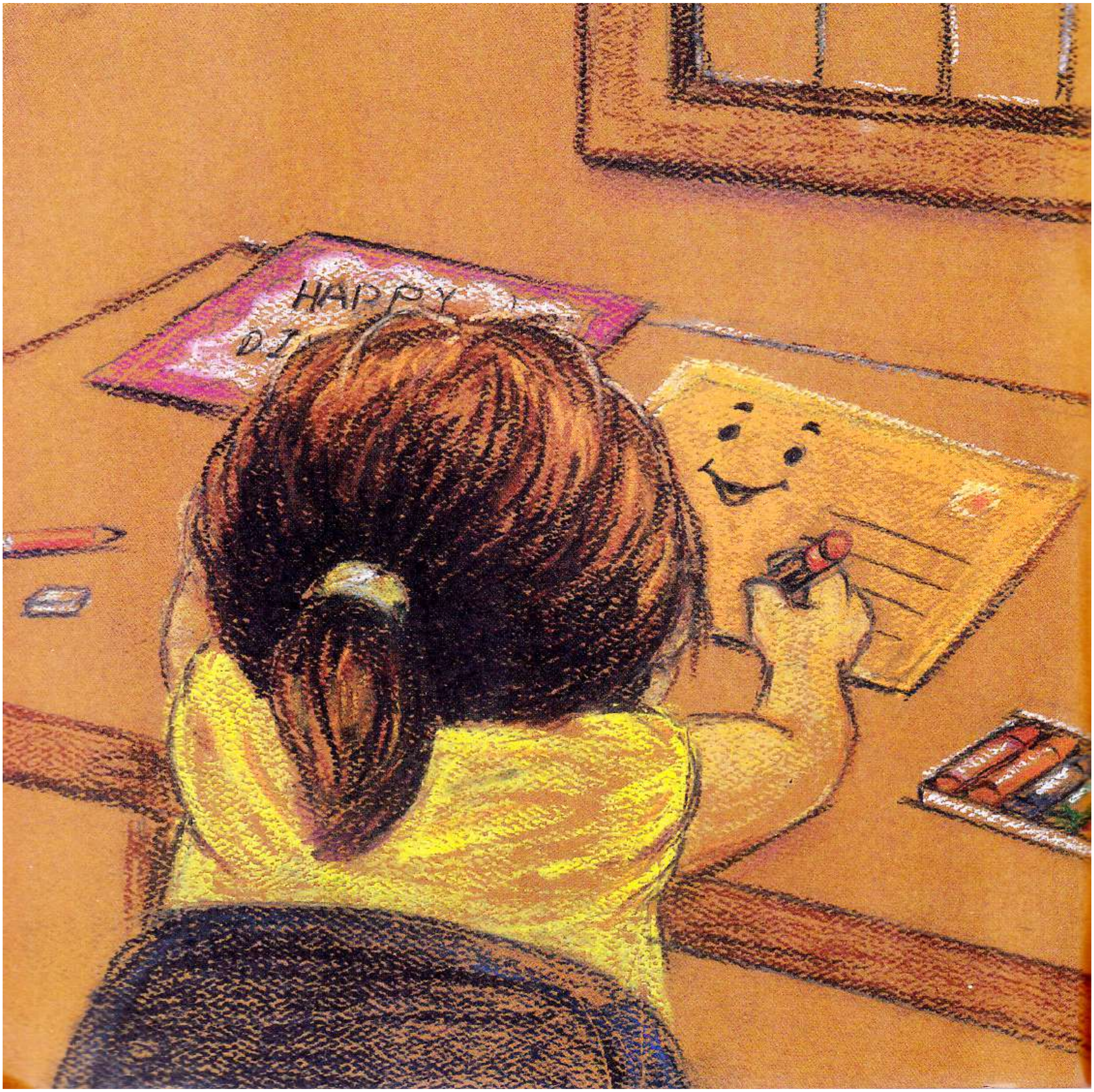
की है।

मैं...

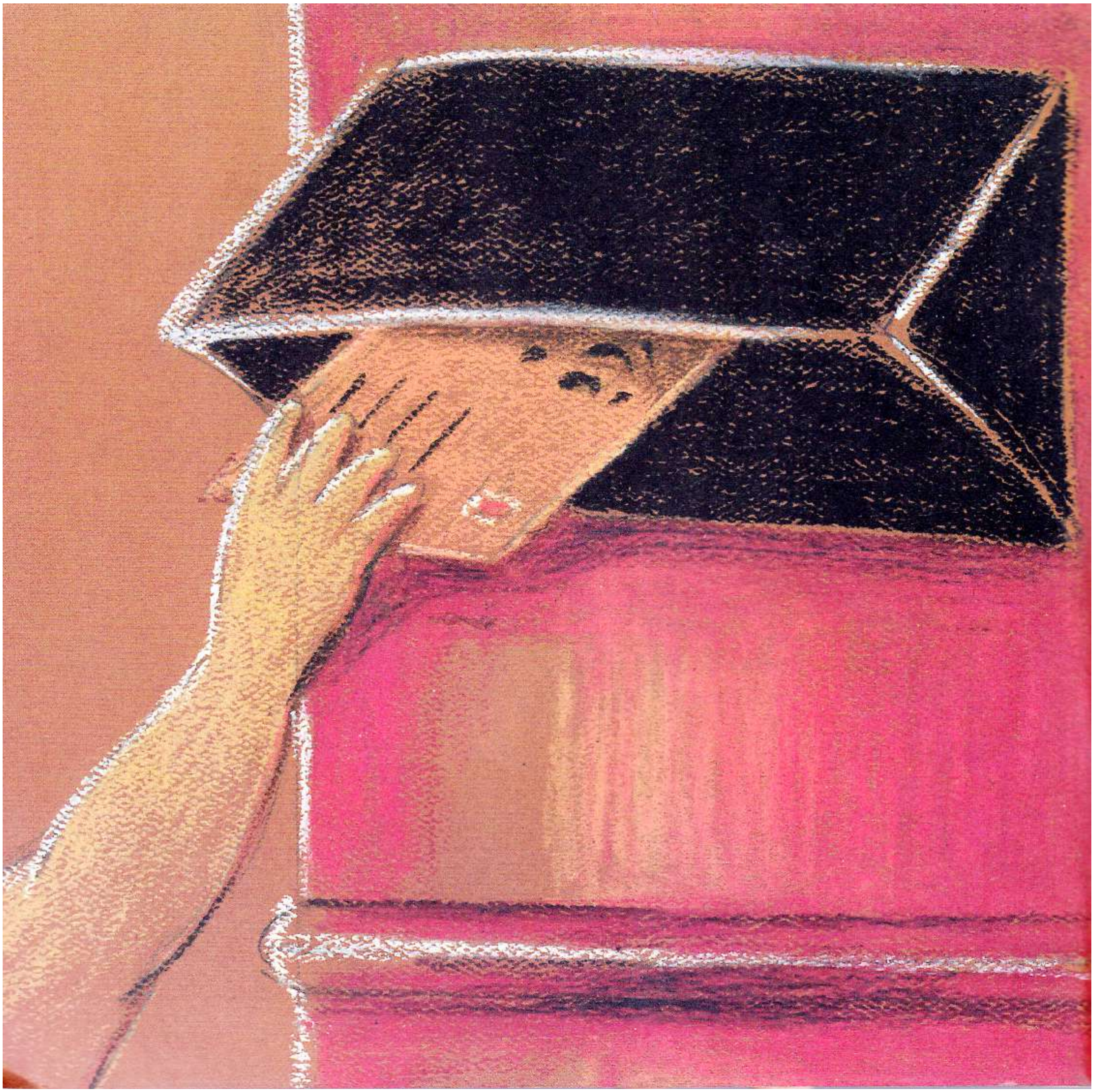
स्कूल .... में हूँ।

कहानी और चित्रः सुमित पाटिल व रूपाली बर्गे

सहयोगः अर्चना कुलकर्णी, केजल मिस्त्री, नीलेश निमकर


HAPPY

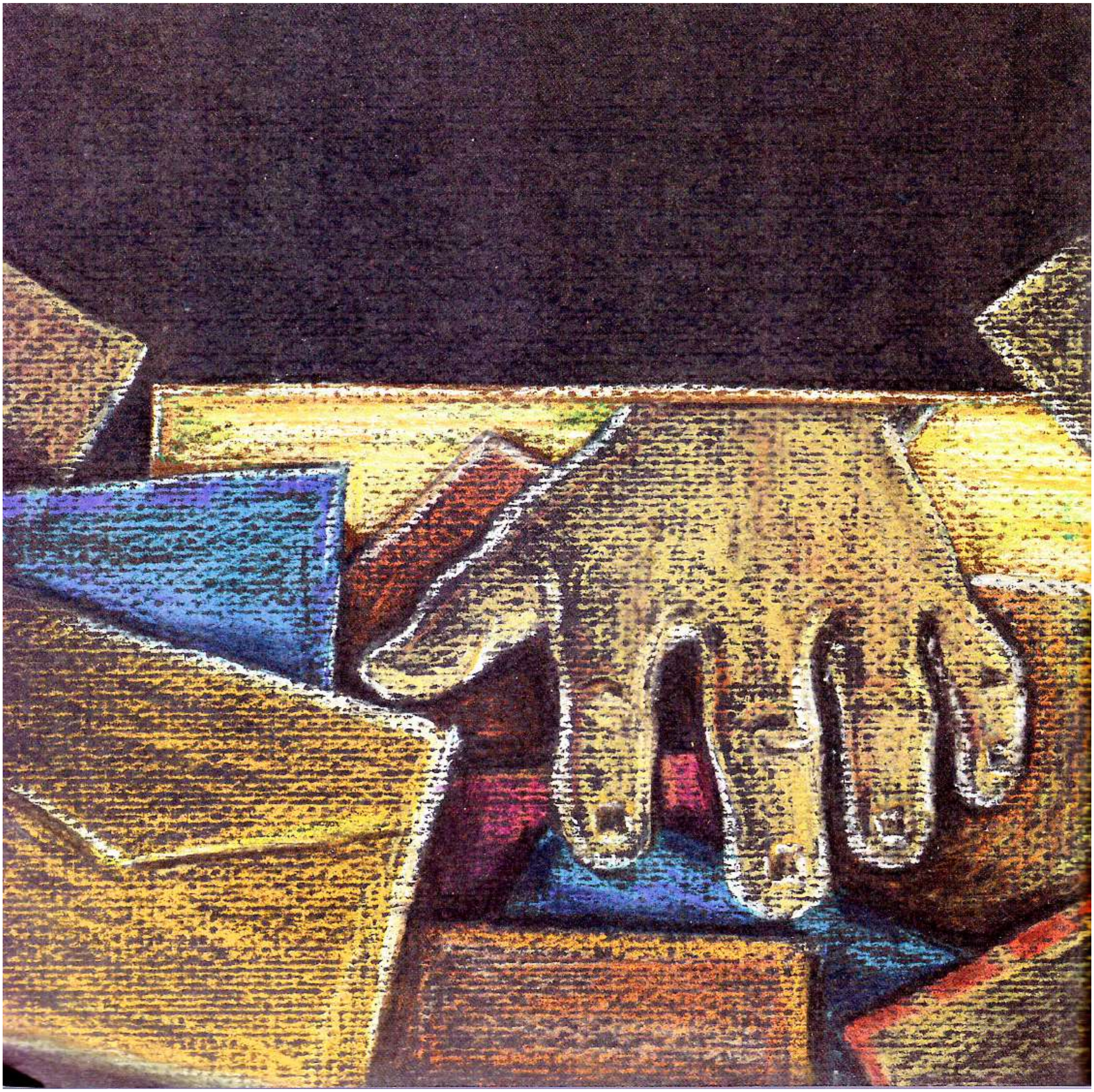
अपूर्वा के दादाजी का जन्मदिन करीब था। उसने दद्दू को एक खत लिखा। खत में फूलों के सुन्दर चित्र बनाए। फिर खत लिफाफे के अन्दर रखा और दद्दू के घर का पता लिखा। लिफाफे पर डाक टिकट चिपकाई और मज़े में लिफाफे पर दो आँखें और मुँह बनाया।



अपूर्वा खत को घर से नज़दीक के डाकघर के लेटर बॉक्स ले गई। उसने खत से कहा, "दद्दू के घर जल्दी जाना है... नागपुर... ठीक है।" ऐसा कहते हुए उसने खत लेटर बॉक्स में डाल दिया।


शंकर श्रीनिवास मघारे
आनंद निवास
२८० मोहन नगर
नागपूर ४४०००१

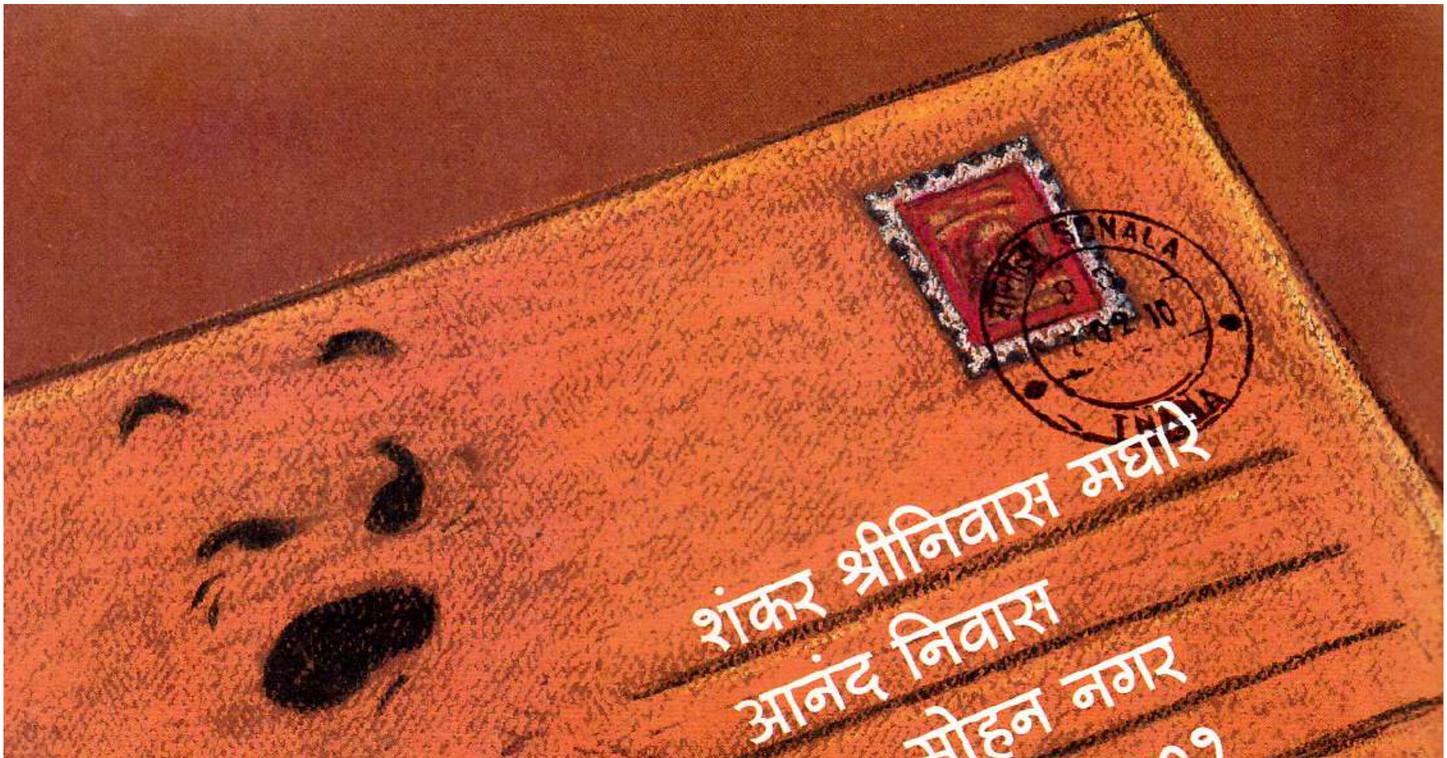
लेटर बॉक्स में बहुत अँधेरा था। अपूर्वा का खत डर गया। वो बाकी खतों के ढेर के पीछे छिपकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद लेटर बॉक्स में थोड़ा उजाला आया। अपूर्वा के खत को दिखा कि पोस्टमैन चाचा ने लेटर बॉक्स का दरवाज़ा खोला है।



उन्होंने भीतर से खत निकालकर एक बोरी में भरना शुरू किया। इसे देखकर अपूर्वा के खत ने भी तुरन्त एक छलाँग लगाई और बोरी में घुस गया।


शंकर श्रीनिवास मघा
आनंद निवास
२८० मोहन नगर
नागपूर ४४०००१

बोरी को साइकिल पर रखकर पोस्टमैन चाचा चल दिए। वे डाकघर आ पहुँचे। उन्होंने सारे खत निकालकर एक टेबल पर रख दिए। फिर एक-एक खत को उठाकर उस पर मुहर लगाना शुरू किया। ठप-ठप की आवाज़ करते हुए आखिरकार अपूर्वा के खत को भी उठाया।


शंकर श्रीनिवास मघारे
आनंद निवास
२८० मोहन नगर
नागपूर ४४०००१

खत ने अपनी आँखें जमकर मींच लीं।

ठप!

और फिर उसके माथे पर गोल मुहर उभर आई थी। मुहर लगाने के बाद पोस्टमैन चाचा ने अपूर्वा के खत को एक खण्ड में रख दिया।

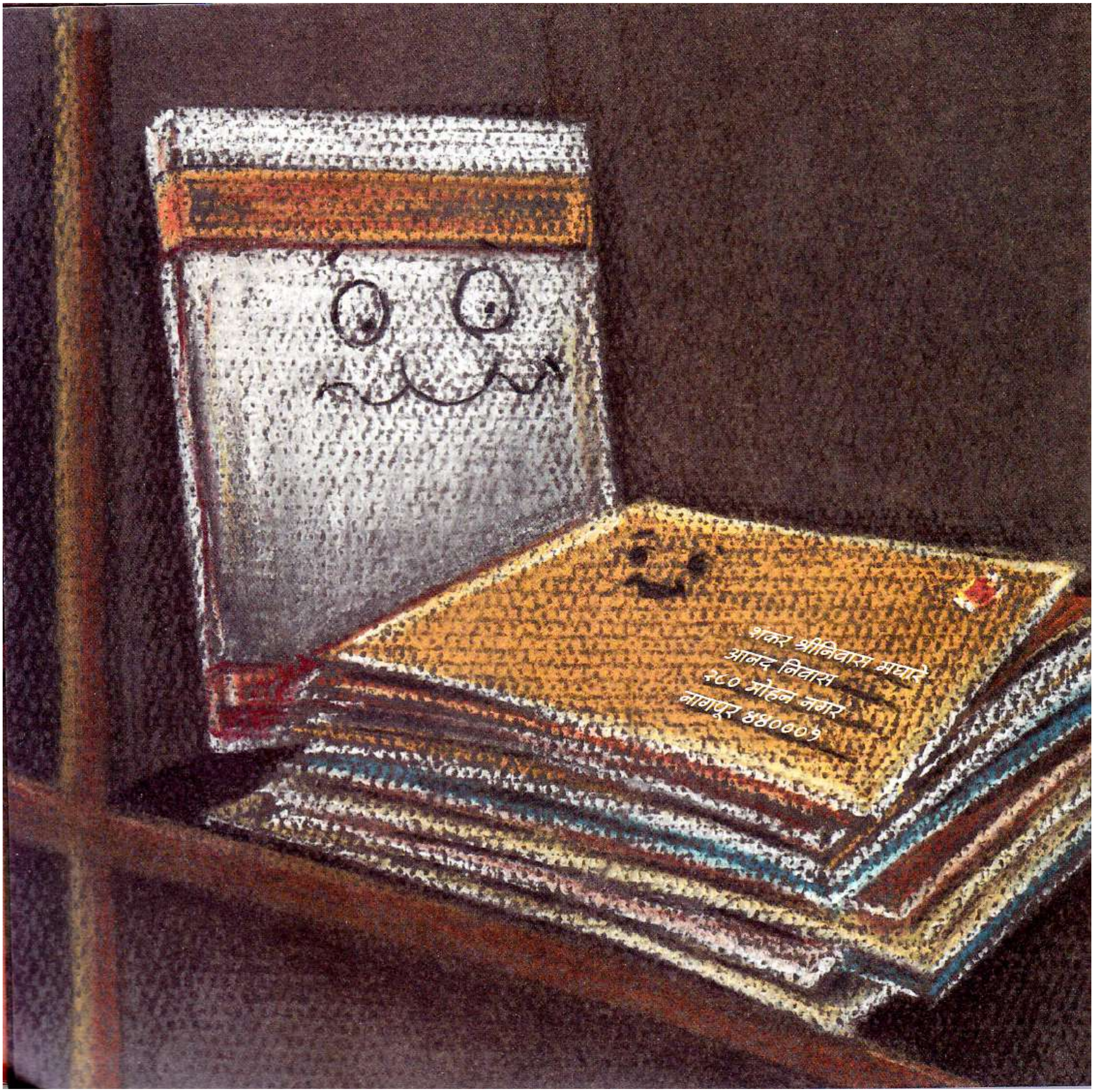


उस खण्ड में काफी सारे खत थे। खत ने एक बड़े-से पैकेट से पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

पैकेट ने जवाब दिया, "नागपुर।"

अपूर्वा का खत बोल पड़ा, "मैं भी नागपुर ही जा रहा हूँ... अपूर्वा के दद्दू के पास।"

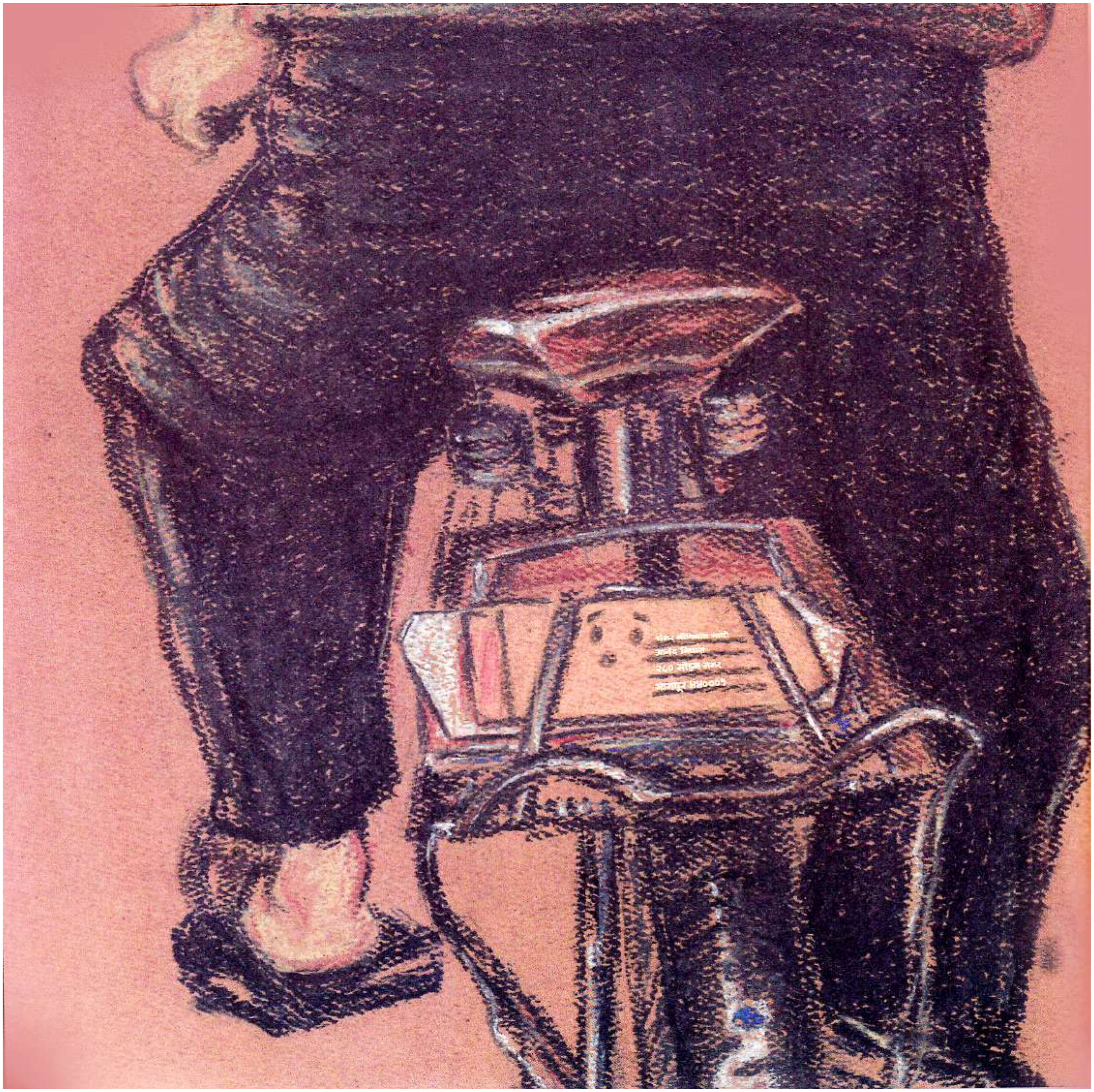
बड़ा पैकेट हँस पड़ा और बोला, "अरे, इस खण्ड के सभी खत नागपुर ही जा रहे हैं। वो पड़ोस वाले खण्ड के खत मुम्बई, उस पार के खण्ड वाले खत सांगली जा रहे हैं।"


शंकर श्रीनिवास मधारे
आनंद निवास
२८० मोहन नगर
नागपूर ४४०००१

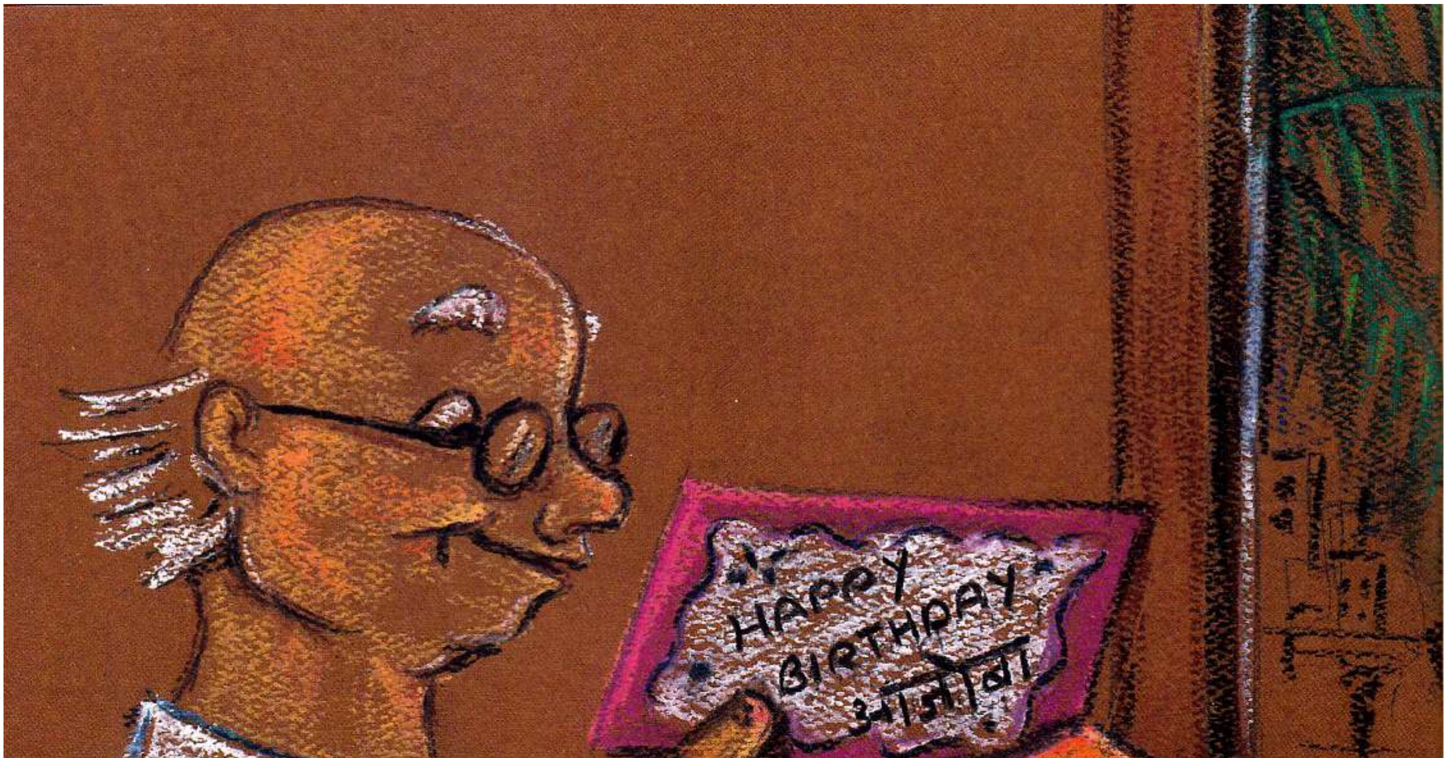
"लेकिन हम लोग नागपुर कैसे जाएँगे।"
अपूर्वा के खत ने पूछा।
बड़े पैकेट ने जवाब देते हुए कहा, "रेलगाड़ी से। देखो हम सब को एक बड़ी बोरी में रखेंगे और वो बोरी नागपुर जाने वाली रेलगाड़ी में रख देंगे। बोरी में थोड़ा अँधेरा होता है, लेकिन तुम घबराना नहीं। सुबह होते-होते हम नागपुर पहुँच जाएँगे। अब तुम इत्मीनान से सो जाओ।"



बड़े पैकेट की बात सुनकर अपूर्वा का खत गहरी नींद सो गया। बीच-बीच में रेल के इंजन की सीटी से खत की नींद खुल जाती थी। वो हौले से आँख खोलकर देख लेता था कि बड़ा पैकेट है ना। और फिर दोबारा सो जाता था।



सुबह जब अपूर्वा के खत की नींद खुली तो वो बोरी से बाहर आ चुका था। और सामने एक नए पोस्टमैन चाचा खड़े थे। वे खत को साइकिल पर बिठाकर अपूर्वा के दद्दू के घर ले गए।


HAPPY BIRTHDAY आजोबा
शंकर श्रीनिवास
आनंद निवास
२८० मोहन नगर
नागपूर ४४०००१

अपूर्वा के दद्दू खत देखकर खुश हुए।
खत ने दद्दू से कहा, “दद्दू मुझे अपूर्वा
ने बताया कि आपका जन्मदिन है।
इसलिए... हैप्पी बर्थ डे!”



खत / Khat

कहानी और चित्रः सुमित पाटिल व रूपाली बर्गे

चित्र सहायकः अर्चना कुलकर्णी, केजल मिस्त्री, नीलेश निमकर

मराठी से अनुवादः माधव केलकर

यह किताब क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (QUEST), पुणे द्वारा विकसित की गई है। (www.quest.org.in)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

जून 2017/2000 प्रतियाँ

कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 230 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-85236-29-7

मूल्यः ₹ 55.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल, फोनः +91 755 256 7589

अब तुम भी अपने दद्दू को खत लिखो।

एक खत की यात्रा के ज़रिए तमाम खतों के सफर की दास्तां बयां करती एक किताब...।



parag
AN INITIATIVE OF
TATA TRUSTS

एकलव्य
मूल्यः ₹ 55.00
9 789385 236297